IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर ई संसाधनों के उपयोग का विष्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. शालिनी गुप्ता

सहायक प्राध्यापक कमला नेहरू महाविद्यालय

सारांष

प्रस्तुत षोध पत्र भोपाल जिले के शासकीय एवं अषासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदतों में से एक अध्ययन में ई संसाधनों के उपयोग का विष्लेषणात्मक अध्ययन करने हेतु किया गया है। आंकडों को एकत्रित करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण के लिए भोपाल जिले के शासकीय एवं अषासकीय विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्ष विधि द्वारा किया गया है। छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनो के उपयोग का मापन करने के लिए डिम्पल रानी एवं जैदका द्वारा निर्मित अध्ययन आदत मापनी का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से भोपाल जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में लिंग के अनुसार ई–संसाधनों के उपयोग का प्राथमिकता स्तर जाना जा सकता है। यह शोध पत्र लिंगानुसार एवं विद्यालय के अनुसार ई–संसाधनों के उपयोग की व्याख्या बेहतर ढ़ंग से करता है। शोध द्वारा यह पता चला कि ई–संसाधनों का उपयोग करने में लिंग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शोध शासकीय एवं अषासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् 100 छात्र एवं 100 छात्राओं पर किया गया है। शोध के परिणाम दर्षाते हैं कि शासकीय विद्यालयों की छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में कमी पायी गई अर्थात् शासकीय विद्यालयों की छात्राएं, छात्रों की अपेक्षा अध्ययन में ई संसाधनों का उपयोग कम करती हैं जबकि अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं में अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में कमी पायी गई अर्थात् अषासकीय विद्यालयों की छात्राएं अध्ययन में ई संसाधनों का उपयोग कम करती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शासकीय एवं अषासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में अध्ययन में ई–संसाधनों का उपयोग करने की आदत छात्रों की अपेक्षा कम होती है।

विषिष्ट शब्दावली – उच्च माध्यमिक विद्यालय, ई संसाधन,

प्रस्तावना – इलेक्ट्रॉनिक संसाधन या ई–संसाधन, कंप्यूटर, स्मार्टफोन, टैबलेट और ई–रीडर जैसे विभिन्न उपकरणों के माध्यम से प्राप्त और उपयोग की जाने वाली डिजिटल जानकारी और सामग्रियों को संदर्भित करते हैं। इन संसाधनों में ई–पुस्तकें, ई–जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस, मल्टीमीडिया सामग्री और डिजिटल सामग्री के अन्य रूप शामिल हैं। इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की बढ़ती लोकप्रियता का श्रेय उनकी पहुंच, लागत–प्रभावशीलता, दक्षता और पर्यावरण–मित्रता को दिया जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों ने सूचना में क्रांति ला दी है।

एक इलेक्ट्रॉनिक संसाधन को एक ऐसे संसाधन के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके लिए कंप्यूटर एक्सेस या किसी इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद की आवश्यकता होती है जो डेटा का संग्रह प्रदान करता है, चाहे वह पूर्ण टेक्स्ट बेस, इलेक्ट्रॉनिक जर्नल, छवि संग्रह, अन्य मल्टीमीडिया उत्पादों और संख्यात्मक, ग्राफिकल या समय–आधारित का संदर्भ देने वाला विषय हो। इन्हें पेन ड्राइव, टेप, इंटरनेट आदि के माध्यम से वितरित किया जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों में, कई तकनीकें और संबंधित मानक विकसित किए गए हैं, जो दस्तावेजों को इलेक्ट्रॉनिक रूप से बनाने और वितरित करने की अनुमति देते हैं। इसलिए वर्तमान स्थिति से निपटने के लिए, लाइब्रेरियन अपने संग्रह विकास के लिए नए मीडिया, अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की ओर स्थानांतरित हो रहे हैं ताकि उपयोगकर्ताओं के दस्तावेजों को बेहतर ढंग से पूरा किया जा सके। चुंबकीय और ऑप्टिकल मीडिया पर ई–संसाधनों का विद्यालयीन पुस्तकालयों के संग्रह पर व्यापक प्रभाव

पड़ता है। ई–संसाधन सूचना संसाधनों के रखरखाव और भंडारण की तुलना में सूचना को प्राप्त करने का सस्ता माध्यम है। कभी–कभी सूचना प्राप्ति के लिये इलेक्ट्रॉनिक रूप ही एकमात्र विकल्प होता है।

पिछले दशक में शिक्षा के लिए पेपर–आधारित से नेट–आधारित इलेक्ट्रॉनिक ज्ञान की ओर स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। यह ज्ञान ई–संसाधनों के निर्माण, भंडारण और प्रबंधन तक पहुंच जैसे कई तरीकों से भौतिक दुनिया से आभासी दुनिया तक पहुंचा।

इंटरनेट आज की शैक्षिक प्रणाली का एक अविभाज्य हिस्सा है। पारंपरिक पुस्तकालय संसाधन उपयोगकर्ताओं की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त हैं। बढ़ते ऑनलाइन वातावरण के परिणामस्वरूप ऐसे उपयोगकर्ता सामने आए हैं, जो प्रौद्योगिकी के अधिक जानकार हैं । विद्यार्थी ई–संसाधनों के माध्यम से किसी भी समय, कहीं भी जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

शोध के उद्देष्य –

1- शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग का अध्ययन करना।
2- अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग का अध्ययन करना।

प्रमुख शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषा :

शासकीय विद्यालय – शासकीय विद्यालयों से तात्पर्य ऐसे विद्यालयों से है जो मध्यप्रदेष सरकार द्वारा संचालित हैं तथा इनका प्रषासन एवं प्रबन्धन सरकार द्वारा किया जाता है।

अषासकीय विद्यालय – अषासकीय विद्यालयों से तात्पर्य ऐसे विद्यालयों से है जिन्हें मध्यप्रदेष माध्यमिक षिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त है तथा निजी संगठनों, संस्थाओं अथवा व्यक्तियों द्वारा इनका संचालन किया जाता है।

ई संसाधन – "ई–संसाधन (इलेक्ट्रॉनिक संसाधन) वह है, जिसमें सूचना (फ़ाइल) को आमतौर पर इलेक्ट्रिकल सिग्नल के रूप में संग्रहित किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए कंप्यूटर की आवश्यकता या अनिवार्यता नहीं है।" इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों में संख्याओं, पाठ, ग्राफिक्स, छवियों, मानचित्रों, चलचित्र, संगीत, ध्वनियों आदि और निर्देश सेट के कार्यक्रमों का प्रतिनिधित्व करने वाला डेटा शामिल होता है।

अध्ययन की परिकल्पना"

परिकल्पना क्र. 1 : षासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना क्र. 2 : अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएं :– समय एवं साधनों को ध्यान में रखते हुए इस शोध के दौरान निम्नांकित सीमाओं को ध्यान में रखा गया है।

1. यह शोध भोपाल जिले तक ही सीमित है।
2. यह शोध कक्षा–10वीं के विद्यार्थियों पर ही किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध शासकीय एवं अषासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 100–100 विद्यार्थियों पर ही किया गया है।

शोध संबंधी पूर्व अध्ययन :–

एनचक्कनवर, आनंद (2014) का पेपर ई–संसाधनों के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित है। डिजिटल तकनीक ने संग्रहित बुद्धि का उपयोग करना अधिक आसान, तेज और आरामदायक बना दिया है। युगों से एकत्रित की गई इस जानकारी का उपयोग आगे के शोध, समाज की बेहतरी और समग्र विकास के लिए किया जाना है। सुदूर क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक संसाधन आसानी से उपलब्ध हैं। इलेक्ट्रॉनिक संसाधन भंडारण की समस्याओं का समाधान करते हैं और सूचना की बाढ़ को नियंत्रित करते हैं। प्रिंट स्रोतों को डिजिटल किया जा रहा है। अकादमिक समुदाय के लिए इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्त्रोत अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। प्रौद्योगिकी के आगमन ने पुस्तकालयों को अपने संग्रह में नई चीज़ें जोड़ने के लिए प्रेरित किया है। इनमें सबसे प्रमुख है ई–संसाधन। यह पेपर इन संसाधनों का एक सिंहावलोकन प्रस्तुत करता है, कुछ फायदे और नुकसान का वर्णन करता है, और कुछ वेब साइटों के पते देता है।

जावेद और अहमद (2020) का पेपर कश्मीर विष्वविद्यालय में अनुसंधान विद्वानों और स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग पर केंद्रित है। मुख्य उद्देश्य ई–संसाधनों के उपयोग, ई–संसाधनों को संभालने में उपयोगकर्ताओं के कौशल और उनके उपयोग के उद्देश्य को निर्धारित करना है। सर्वेक्षण कश्मीर विष्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के 250 शोध विद्वानों (एम.फिल./पीएचडी) और स्नातकोत्तर छात्रों, के बीच वितरित एक संरचित प्रश्नावली के माध्यम से किया गया था और प्रतिक्रिया दर 80ः थी। उत्तरदाताओं के चयन और उनके साथ बातचीत के लिए यादृच्छिक नमूना पद्धति का उपयोग किया गया था। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों से पता चलता है कि अधिकांश छात्रों ने असाइनमेंट पर काम करने, शोध प्रस्ताव लेखन, साहित्य समीक्षा लेखन, शोध रिपोर्ट लेखन, वर्तमान जागरूकता और सहकर्मी–समीक्षा के माध्यम से चल रही वैज्ञानिक बहसों की इत्मीनान से खोज सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए इलेक्ट्रॉनिक जर्नल संसाधनों का उपयोग किया। पेपर का निष्कर्ष है कि इलेक्ट्रॉनिक संसाधन कश्मीर विष्वविद्यालय में अनुसंधान विद्वानों के स्नातकोत्तर छात्रों की सूचना आवश्यकताओं का एक अभिन्न अंग बन गए हैं।

ताहिर एवं सहयोगियों (2010) ने पंजाब विष्वविद्यालय में इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों के उपयोग पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस (ऑनलाइन और सीडी–रोम), इलेक्ट्रॉनिक जर्नल, डिजिटल किताबें, इंटरनेट और ई–मेल जैसे इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की उपलब्धता का मानवतावादियों के सूचना चाहने वाले व्यवहार पर बहुत प्रभाव पड़ता है। उन्हें इलेक्ट्रॉनिक सुविधाएं प्राप्त करने और उपयोग करने में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, लेकिन उन्हें लगता है कि तकनीक के साथ उनका काम आसान हो गया है।

दास एवं सहयोगियों (2019) के शोध पत्र "भारत में उच्च षिक्षा और ई संसाधन" के अनुसार ई–संसाधनों और सूचना प्रौद्योगिकी ने भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली में तेजी से बदलाव लाये हैं। ई–संसाधन शिक्षण–अधिगम और अनुसंधान के लिए मूल्यवान उपकरण हैं। यह शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करने में उच्च शिक्षा का सहायक स्तंभ है। शिक्षा और अनुसंधान में ई–संसाधनों तक पहुँचने के लिए वेबसाइटें और इंटरनेट सेवाएँ महत्वपूर्ण उपकरण हैं। भारतीय प्रणालियों ने उपयोगकर्ता की आवश्यकता को पूरा करने के लिए ई–संसाधनों की सदस्यता लेना शुरू कर दिया। इस पेपर में उच्च शिक्षा के लिए अपनी गति से अधिक सीखने के लिए एक सशक्त और सक्षम वातावरण का हवाला दिया गया है। अध्ययन में ई–संसाधनों के अवसरों और चुनौतियों की झलक मिलती है जिन्हें कहीं से भी और कभी भी उपलब्ध कराया जा सकता है। शिक्षा की उच्च गुणवत्ता और ई–संसाधन उपयोग में सुधार के लिए अनुसंधान उच्च शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक है।

शर्मा (2009) ने कृषि विश्वविद्यालयों पर अपने अध्ययन में पाया कि ई–संसाधन, जो लैन सेटिंग में उपलब्ध हैं, उनकी अनुसंधान क्षमता को बढ़ाने के लिए संकाय और शोधकर्ताओं के आवासों पर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

हुसैनी (2017) ने 'इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग और प्रभावः दो चयनित अकादमिक पुस्तकालयों पर एक अध्ययन' पर एक रिपोर्ट आयोजित की। इस शोध में जिस पद्धति का उपयोग किया गया है वह है– प्राथमिक और द्वितीयक डेटा संग्रह । सर्वेक्षण प्रश्नावली के माध्यम से प्राथमिक डेटा एकत्र किया गया और अनुसंधान के पिछले कार्यों के माध्यम से माध्यमिक डेटा संग्रह किया गया। यह शोध उपयोगकर्ताओं पर इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के प्रभाव के अध्ययन पर भी केंद्रित है। इस प्रकार हुसैनी (2017) ने निष्कर्ष निकाला कि अंतर्ज्ञान पुस्तकालयों में ई–संसाधन अभी भी दिन–प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। यह देखा गया है कि पुस्तकालयों में पारंपरिक पुस्तकों का स्थान ई–संसाधनों ने ले लिया है। यह भी देखा गया है कि ई–संसाधनों के उपयोग के भी फायदे और नुकसान हैं।

शोध अध्ययन की प्रविधि – प्रस्तुत शोध अध्ययन शेपाल जिले के शाासकीय एवं अषासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों पर किया गया है। जिसमें शासकीय विद्यालयों के 100 विद्यार्थी एवं अषासकीय विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों का चयन शोध हेतु किया गया। शासकीय एवं अषासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के चयन हेतु यादृच्छिक सर्वे न्यादर्ष पद्धति का प्रयोग किया गया। विद्यार्थियों के अध्ययन में ई संसाधनों के उपयोग का स्तर मापने हेतु जैदका द्वारा निर्मित अध्ययन आदत मापनी का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन में जिन स्वतंत्र चरों का प्रभाव आश्रित चरों पर देखा गया उनका विवरण निम्न है –

स्वतंत्र चर – जिस चर पर प्रयोगकर्ता का पूर्ण रूप से नियंत्रण रहता है एवं जिसके कारण चरों के प्रभाव का अध्ययन प्रयोगकर्ता करना चाहता है, उसे स्वतंत्र चर कहा जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के स्वतंत्र चर है –

1. शासकीय एवं अषासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
2. छात्र एवं छात्राएं

आश्रित चर – आश्रित चर वह चर होता है, जिस पर स्वतंत्र चर का प्रभाव पड़ने पर व्यवहारिक परिवर्तन होता है तथा जिसका अध्ययन एवं मापन शोधकर्ता द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के आश्रित चर है –

- अध्ययन में ई–संसाधन

तालिका क्रमांक 1.1 (न्यादर्ष विवरण)

क्र.	लिंगानुसार चयन	संख्या	कुल योग
1	शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र	50	200
2	शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राएं	50	
3	अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र	50	
4	अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र	50	

प्रदत्तों का विष्लेषण –

तालिका क्र. 1.2

शासकीय विद्यालयों के छात्र – छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र – छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग का टी–मान

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–सारणीमान	परिकलित टी–मान	सार्थकता
अध्ययन में ई–संसाधनों का उपयोग	शासकीय विद्यालयों के छात्र	50	13ण्58	4ण्28	1ण्97	ण्516	सार्थक नहीं
	शासकीय विद्यालयों की छात्राएं	50	13ण्42	4ण्21			
अध्ययन में ई–संसाधनों का उपयोग	अशासकीय विद्यालयों के छात्र	50	13ण्68	4ण्10	1ण्97	ण्532	सार्थक नहीं
	अशासकीय विद्यालयों की छात्राएं	50	13ण्37	3ण्93			

व्याख्या – तालिका क्रमांक 1.2 से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग का मध्यमान क्रमशः 13.58 एवं 13.42 है। इस प्रकार शासकीय विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान शासकीय विद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। तालिका से स्पष्ट है कि परिकलित टी मान .516 है जबकि ;कद्धि त्र 298 के लिए .05 स्तर सार्थकता परीक्षण के लिए टी का सारणीमान 1.97 है। इस प्रकार सारणीमान से परिकलित मान कम है अर्थात् (ण्516ढ1.97). अतः परिकल्पना शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में सार्थक अन्तर नहीं है स्वीकृत होती है। इस प्रकार कह सकते हैं कि शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक 1.2 से यह स्पष्ट होता है कि अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग का मध्यमान क्रमशः 13.68 एवं 13.37 है। इस प्रकार अशासकीय विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। तालिका से स्पष्ट है कि परिकलित टी मान .532 है जबकि ;कद्धि त्र 298 के लिए .05 स्तर सार्थकता परीक्षण के लिए टी का सारणीमान 1.97 है। इस प्रकार सारणीमान से परिकलित मान कम है अर्थात् (.532ढ1.97). अतः परिकल्पना अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में सार्थक अन्तर नहीं है स्वीकृत होती है। इस प्रकार कह सकते हैं कि अशासकीय विद्यालयों के छात्र –छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में सार्थक अन्तर नहीं है।

सामान्यीकरण – तालिका में दिए गए दोनों समूहों के मध्यमानों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान शासकीय विद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। अतः शासकीय विद्यालयों की छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में कमी पायी गई ।

अशासकीय विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। अतः अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं में अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में कमी पायी गई ।

आरेख 1.2

शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालयों के

छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग का मध्यमान

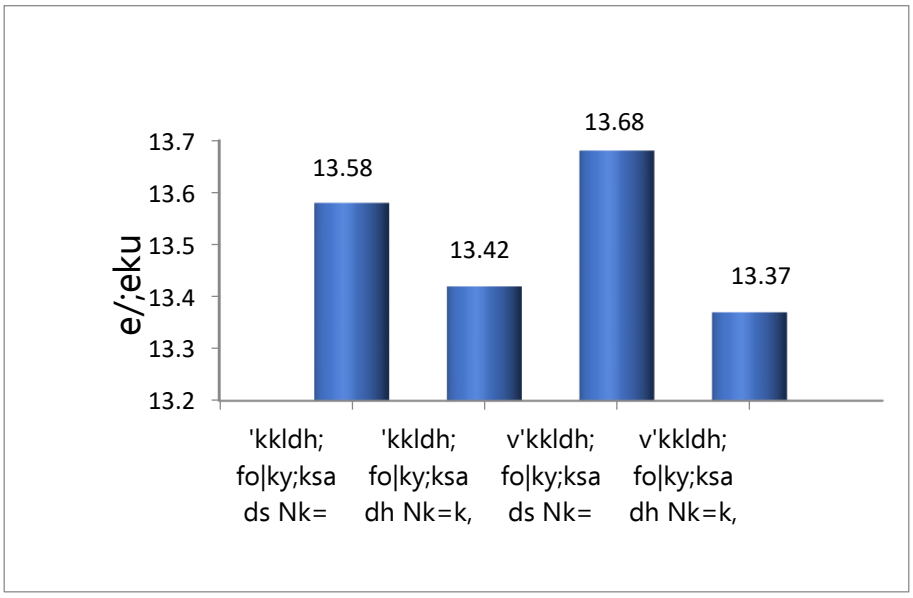

आरेख में दिए गए दोनों समूहों के मध्यमानों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान शासकीय विद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। अतः शासकीय विद्यालयों की छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में कमी पायी गई ।

अशासकीय विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। अतः अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं में अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में कमी पायी गई ।

शोध के परिणाम –

परिकल्पना 1 – षासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में सार्थक अन्तर नहीं है।

शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 2 – अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में सार्थक अन्तर नहीं है।

अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोध में शासकीय विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान शासकीय विद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। अतः शासकीय विद्यालयों की छात्राओं के अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में कमी पायी गई अर्थात् शासकीय विद्यालयों की छात्राएं, छात्रों की अपेक्षा अध्ययन में ई संसाधनों का उपयोग कम करती हैं जबकि अशासकीय विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। अतः अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं में अध्ययन में ई–संसाधनों के उपयोग में कमी पायी गई अर्थात् अषासकीय विद्यालयों की छात्राएं अध्ययन में ई संसाधनों का उपयोग कम करती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि छात्राओं में अध्ययन में ई–संसाधनों का उपयोग करने की आदत छात्रों की अपेक्षा कम होती है।

भावी शाोध हेतु सुझाव

1. इस शोध को माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के ई संसाधनों का उपयोग मापने हेतु शी किया जा सकता है।
2. इस शोध को प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के ई संसाधनों का उपयोग मापने हेतु शी किया जा सकता है।
3. प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्याथियों में लिंग के अनुसार ई–संसाधनों के उपयोग का तुल्नात्मक अध्ययन करने हेतु शी शोध कार्य किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. https://www.emerald.com/insight/search?q=Javaid%20Ahmad%20Wagay
2. https://www.researchgate.net/publication/344509961_Impact_of_E-resources_on_Higher_Learning_a_study
3. Enchakkanavar, Anand. (2014). Types of E-Resources and its utilities in Library. INTERNATIONAL JOURNAL OF INFORMATION SOURCES AND SERVICES International Peer reviewed Journal ISSN: 2349-428X (Print) : September – October,2014:. Vol. 1. 97-104.
4. Hossaini, S. (2017). Use and Impact of Electronic Resources: A Study on Two Selected Academic Libraries. International Journal of Law, Humanities & Social Science, 1(1), 23-59.
5. Kaur ,Jasgeet & Singh , Pankaj (2020) : Study Habits And Academic Performance: A Comparative Analysis, 7(7), European Journal of Molecular & Clinical Medicine ISSN 2515-8260
6. Mehnaaz and Siddiqui, H.W.(2021) : "Study Habits in Relation to Academic Achievement among Secondary School Students of Hyderabad", International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research 8(6), e966-e970, http://www.jetir.org/papers/JETIR2106694.pdf www.jetir.org, ISSN: 2349-5162,
7. Rabia,M. , Mubarak,N. , Tallat,H. , Nasir, W.(2107) : A study on study Habits and academic performance of students, International Journal of Asian Social Science ISSN(e): 2224-4441 ISSN(p): 2226-5139 DOI:10.18488/journal.1.2017.710.891.897 Vol. 7, No. 10, 891-897© 2017 AESS Publications. All Rights Reserved. URL: www.aessweb.com
8. Sahu, Surendra & Singh, Sonal. (2020). Impact of E-resources on Higher Learning: a study.
9. Sharma, C. "Use and Impact of E-resources at Guru Gobind Singh Indraprastha University (India): A Case Study." Electronic Journal of Academic and Special Librarianship 1.10 (2009): 25-33. Emerald insight. Web. .
10. Tahir, M., K. Mahmood, and F. Shafique. "Use of Electronic Information Resources and Facilities by Humanities Scholars." The Electronic Library 28.1 (2010): 122-36. Emerald insight. Web.
11. Velmurugan, Senthur. (2019). e- resources.